www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 27 अक्टूबर 2019

दैनिक जागरण
अंधेरे को परास्त करने के लिए रोशनी की एक किरण ही काफी है

# सबक सिखाने वाले चुनाव नतीजे



संजय गुप्त

**विधानसभा चुनावों में मतदाता यह देखता है कि राज्य सरकार ने उसकी समस्याओं को सुलझाने के लिए क्या किया, न कि यह कि केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय महत्व के सवालों को किस तरह हल किया?**

महाराष्ट्र और हरियाणा के विधानसभा चुनाव नतीजे यही स्पष्ट कर रहे हैं कि राजनीतिक हालात लगातार बदलते रहते हैं। चंद माह पहले लोकसभा चुनावों में भाजपा ने नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और अमित शाह के कुशल प्रबंधन में देश के अन्य अनेक हिस्सों के साथ महाराष्ट्र और हरियाणा में भी शानदार जीत हासिल की थी, लेकिन विधानसभा चुनावों में इन दोनों राज्यों में विपक्षी दल उसे चुनौती देते नजर आए। दोनों राज्यों के नतीजे भाजपा को चिंतित करने के साथ ही उसके आत्मविश्वास पर असर डालने वाले हैं। हरियाणा में तो विपक्ष ने एक तरह से भाजपा का विजय रथ ही रोक दिया। यहां भाजपा ने 75 पार का लक्ष्य तय किया था, लेकिन उसे बहुमत के लिए जरूरी 46 सीटें भी नहीं मिलीं। इसके विपरीत जो कांग्रेस गुटबाजी से ग्रस्त दिखने के साथ मुद्दों के अभाव से जूझ रही थी उसने पिछली बार के मुकाबले दूनी सीटें हासिल कर लीं और नई बनी जननायक जनता पार्टी ने 10 सीटें हासिल कर लीं।

जब यह लग रहा था कि त्रिशंकु विधानसभा के कारण हरियाणा में सरकार गठन में देरी होगी तब भाजपा ने बड़ी आसानी से बहुमत का जुगाड़ कर लिया। पहले करीब-करीब सभी निर्दलीय उसके साथ आ गए, फिर जननायक जनता पार्टी उसके साथ सरकार में शामिल होने को तैयार हो गई। जननायक जनता पार्टी के सरकार में शामिल होने से एक ओर जहां भावी सरकार को स्थायित्व की गारंटी मिली वहीं भाजपा दागी छवि वाले विधायक गोपाल कांडा का समर्थन लेने की तोहमत से बच गई। अगर संगीन आरोपों से घिरे गोपाल कांडा के समर्थन से भाजपा सरकार बनाती तो उसके लिए अपनी छवि बचाना मुश्किल हो जाता। यह अच्छा हुआ कि भाजपा ने कांडा से दूरी बनाना बेहतर समझा। जननायक जनता पार्टी के भाजपा के साथ आने से भाजपा को जाटों की नाराजगी दूर करने में भी मदद मिलेगी, लेकिन यह सामान्य बात नहीं कि खट्टर सरकार यह समझ ही नहीं सकी कि जाट मतदाता उन्हें सत्ता से बाहर करने का मन बना चुके थे।

यह आश्चर्यजनक है कि जिस हरियाणा में सरकार बनने में देरी के आसार दिख रहे थे वहां तो सरकार का गठन पहले सुनिश्चित हो गया और जिस महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना ने आसानी से बहुमत हासिल किया वहां सरकार गठन में विलंब होता दिख रहा है। इसका कारण शिवसेना की ओर से सौदेबाजी करना है। वह ढाई-ढाई साल तक बारी-बारी से सत्ता संभालने के फार्मूले पर जोर दे रही है। चूंकि महाराष्ट्र में भाजपा उम्मीद से कम एक सौ पांच सीटें ही जीत सकी इसलिए 56 सीटें हासिल करने वाली शिवसेना उस पर अपना दबाव बढ़ा रही है। देखना है कि यह दबाव क्या गुल खिलाता है? अगर शिवसेना सौदेबाजी की अपनी ताकत का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करती है तो भाजपा से उसके संबंधों में फिर से खटास आ सकती है और उसका असर सरकार के कामकाज पर भी पड़ सकता है।



अवधेश राजपूत

महाराष्ट्र और हरियाणा में भाजपा ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के केंद्र सरकार के फैसले को जोर-शोर से प्रचारित किया था। इसके अलावा उसने सीमाओं की सुरक्षा समेत राष्ट्रवाद को भी भुनाने की कोशिश की, लेकिन नतीजे बता रहे हैं कि क्षेत्रीय और स्थानीय मसले भारी पड़े। इसके अलावा यह भी दिख रहा है कि जाति-बिरादरी से जुड़े मसलों ने भी अपना असर दिखाया। जहां हरियाणा में जाटों की नाराजगी मुद्दा बनी वहीं महाराष्ट्र में एनसीपी के शरद पवार ने मराठा कार्ड खेला। उन्होंने खुद पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों को भी अपने पक्ष में भुनाने का काम किया। शायद इसी कारण एनसीपी के मुकाबले कांग्रेस पिछड़ गई। ध्यान रहे कि हरियाणा की तरह महाराष्ट्र में भी कांग्रेस गुटबाजी से ग्रस्त थी। कांग्रेस हरियाणा में तो भूपेंद्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व में फिर से खड़ी होती दिखी, लेकिन महाराष्ट्र में उसका प्रदर्शन फीका ही रहा। इन दोनों राज्यों में कांग्रेस को जो भी सफलता मिली उसमें सोनिया-राहुल का योगदान मुश्किल से ही नजर आता है। सोनिया गांधी ने महाराष्ट्र में गिनती की सभाएं कीं। उनके मुकाबले राहुल ने ज्यादा सभाएं कीं, लेकिन वह घिसे-पिटे मुद्दों के सहारे ही मोदी सरकार को घेरते रहे। उनके पास राफेल सौदे में गड़बड़ी और चंद उद्योगपतियों को लाभ पहुंचाए जाने के वही पुराने जुमले थे जो वह लोकसभा चुनाव में उछाल चुके थे।

पता नहीं कांग्रेस नेतृत्व अपनी कमजोरियों को कब समझेगा, लेकिन कम से कम महाराष्ट्र और हरियाणा के नतीजों से भाजपा को तो यह समझना ही होगा कि विधानसभा चुनावों में क्षेत्रीय मुद्दे ही कारगर रहते हैं। अगर राज्य सरकारें क्षेत्रीय मसलों को सही ढंग से हल नहीं करेंगी तो फिर राष्ट्रीय मुद्दे उनके लिए मददगार नहीं हो सकते। विधानसभा चुनावों में मतदाता यह देखता है कि राज्य सरकार ने उसकी रोजमर्रा की समस्याओं को सुलझाने के लिए क्या किया, न कि यह कि केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय महत्व के सवालों को किस तरह हल किया? यह एक महत्वपूर्ण पहलू है।

महाराष्ट्र और हरियाणा में भाजपा को मनमाफिक जीत नहीं मिली तो इसकी एक वजह आर्थिक मंदी का माहौल भी है। हैरत नहीं कि मतदान में कमी का एक बड़ा कारण यह माहौल ही रहा हो। यह मानने के पर्याप्त कारण हैं कि आर्थिक सुस्ती से उदासीन और निराशा मतदाताओं ने वोट डालने से गुरेज किया या फिर नोटा का इस्तेमाल किया। एक अन्य कारण उपयुक्त उम्मीदवारों का अभाव भी हो सकता है। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि हरियाणा में तमाम ऐसी सीटें रहीं जहां हार-जीत दो हजार वोटों के अंतर से हुई।

भाजपा को इस पर भी गौर करना चाहिए कि दोनों राज्यों में उसके ज्यादातर मंत्री चुनाव क्यों हार गए? मंत्रियों की हार जनता की नाराजगी को जाहिर करती है। भाजपा के लिए यह गनीमत रही कि इस नाराजगी के बाद भी वह दोनों राज्यों में सत्ता से बाहर नहीं हुई, लेकिन उसे मतदाताओं की उदासीनता और नाराजगी के कारणों की तह तक जाना होगा और उनका निवारण भी करना होगा। इसी के साथ उसे चुनाव वाले राज्यों में अपनी सरकारों के कामकाज पर भी ध्यान देना होगा, क्योंकि महाराष्ट्र और हरियाणा के नतीजों ने विपक्ष का मनोबल बढ़ाने का काम किया है। यह मनोबल दिल्ली और झारखंड में भाजपा के लिए चुनौती बन सकता है। यह ठीक है कि कांग्रेस राजस्थान, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ की जीत को लोकसभा चुनावों में नहीं भुना सकी थी, लेकिन वह विपक्षी दलों के साथ मिलकर आगामी विधानसभा चुनावों में जनता की नाराजगी को फिर से भुना सकती है। इसे देखते हुए भाजपा के लिए यह आवश्यक है कि वह जनता की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए कमर कसे।

response@jagran.com

## प्रकाश पर्व का संदेश

हमारे पर्व एवं त्योहार केवल जीवन की एकरसता को ही नहीं तोड़ते, बल्कि उत्सवधर्मिता का संचार कर आशाओं के दीप भी जलाते हैं। जब ऐसा होता है तो समाज और राष्ट्र में नई ऊर्जा का प्रवाह होता है। चूंकि दीप पर्व उत्सवों का उत्सव है इसलिए उसकी तैयारी भी जोर-शोर से होती है और स्वागत भी। जैसे मनुष्य जीवन कभी भी चुनौतियों से मुक्त नहीं होता वैसे ही समाज और राष्ट्र भी हर समय नाना प्रकार की चुनौतियों से दो-चार होता ही रहता है। यह वर्तमान में भी है। आज एक चुनौती आर्थिक सुस्ती से पार पाने की है तो एक सामाजिक सद्भाव को सशक्त करने की। हमें इन सभी चुनौतियों से पार पाना ही होगा। इससे बेहतर और कुछ नहीं कि यह दीपावली हम सबमें यह भाव जाग्रत करे कि समाज और राष्ट्र के समक्ष जो भी समस्याएं हैं उनका समाधान हम सबको मिलकर करना है। सामाजिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता ऐसे तत्व हैं जिनकी आवश्यकता हर काल खंड में रही है। आगे भी रहेगी और हम उसकी आसानी से पूर्ति तब कर सकेंगे जब अपनी समृद्ध परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत से भली तरह परिचित होंगे और यह स्मरण रखेंगे कि देश में एक बड़ा वर्ग है जिसे अभी मुख्यधारा में शामिल होना शेष है। इस वर्ग के मुख्यधारा में शामिल होने में कहीं निर्धनता बाधा है तो कहीं अज्ञानता। इन बाधाओं को दूर करने में शासन-प्रशासन के साथ समाज के उस तबके को भी आगे आना ही चाहिए जो सक्षम और समृद्ध है। ऐसे में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सुख और समृद्धि का प्रकाश उन तक कैसे पहुंचे जो इससे वंचित हैं।

प्रकाश पर्व अंधकार से लड़ने का संदेश लेकर आता है, लेकिन केवल उस अंधेरे से नहीं जो अमावस की रात के रूप में हर तरफ दिखता है, बल्कि उस तमस से भी जो हमारे मन-मस्तिष्क में घर कर लेता है। कोई भी समाज हो उसे भौतिक समृद्धि के साथ आत्मिक शांति भी चाहिए होती है। इसकी प्राप्ति तब होती है जब मन के कलुष को दूर करने की चेष्टा की जाती है। दीपावली पर इस कलुष को दूर करने का संकल्प इसलिए लिया जाना चाहिए, क्योंकि यह नकारात्मकता को बढ़ाता है। चूंकि आज नकारात्मकता एक अंधकार के रूप में फैलती जा रही है इसलिए उससे लड़ने के उपाय हम सबको खोजने होंगे। नकारात्मकता केवल सकारात्मकता का हरण ही नहीं करती, बल्कि वह पूरे परिवेश को दूषित करती है। हमें अपने सामाजिक परिवेश की भी चिंता करनी है और बिगड़ते हुए पर्यावरण की भी। वास्तव में पर्यावरण को बचाकर ही हम दीपावली को ऋतु परिवर्तन के पर्व के रूप में मनाते रह सकते हैं।

## सही फैसला

कोलकाता में जर्जर इमारतें बड़ी समस्या हैं। आए दिन, विशेषकर बारिश के मौसम में जर्जर इमारतें ढह जाती हैं, जिनकी चपेट में आने से जान-माल का नुकसान होता रहता है। ऐसी इमारतों की संख्या हजारों में है। पिछले कुछ वर्षों में कोलकाता नगर निगम (केएमसी) की ओर से सैकड़ों इमारतों को चिन्हित कर उन्हें खतरनाक घोषित किया जा चुका है, बावजूद इसके अभी भी इन खतरनाक इमारतों में लोग रह रहे हैं। आखिर इन पुरानी इमारतों की हालत जर्जर क्यों है? इसकी सबसे बड़ी वजह है मकान मालिकों व किरायेदारों के बीच विवाद। हजारों की संख्या में ऐसे लोग हैं जो दशकों से इन मकानों में रह रहे हैं और किराया भी 100 व 200 रुपये देते हैं। मकान मालिक ऐसे किरायेदारों को निकाल भी नहीं सकते, जिससे उन इमारतों की हालत दिन-ब-दिन खराब होती जाती है और वे ढह रही हैं। पिछले वर्ष बंगाल सरकार ने जर्जर इमारतों के ढहने से लोगों की मौत की घटनाओं को देखते हुए एक कानून बनाया था, जिसमें मकान मालिक व किरायेदारों के विवाद को निपटाने व जर्जर इमारतों को दुरुस्त करने की बात कही गई थी। उस कानून को पारित हुए एक साल से अधिक समय बीत चुका है, लेकिन अब तक पूरी तरह से लागू नहीं हो सका है। इसी बीच अब कोलकाता नगर निगम ने भी नया नियम लागू कर दिया है, जो सही फैसला है। नए नियम के तहत अगर मकान मालिक जर्जर इमारतों की मरम्मत नहीं कराते हैं और मकान ढह जाता है और किसी की जान चली जाती है या फिर कोई जख्मी हो जाता है तो ऐसे मकान मालिक के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन मकान मालिकों को जुर्माने के साथ-साथ जेल भी जाना पड़ सकता है। गत शुक्रवार को कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम ने कहा कि पुरानी जर्जर इमारतें बड़ी समस्या बनी हुई हैं। बारिश के मौसम में ऐसी इमारतें लगातार ढह रही हैं, जिसमें लोगों की जान जा रही है। इसे देखते हुए इस समस्या से निपटने के लिए सख्त नियम लागू किया जा रहा है। इस नियम के तहत अगर मकान मालिक अपनी जर्जर इमारत की मरम्मत नहीं कराता है और ढहने से जान-माल का नुकसान होता है तो ऐसी हालत में मकान मालिकों से हर्जाना वसूला जाएगा। यदि किसी की मौत हो जाती है तो मकान मालिकों को पांच साल की जेल भी हो सकती है। केएमसी का यह फैसला सही है, लेकिन इसपर सख्ती से अमल होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होगा तो नियम लागू करने से कोई फायदा नहीं होगा और स्थिति नहीं बदलेगी।

**किसी जर्जर मकान के ढहने से उसके मालिक के खिलाफ कार्रवाई हादसों पर विराम लगाने में मददगार होगी**

# अंधकार को चुनौती देने वाला उत्सव



गिरीश्वर मिश्र

**हमें नकली रोशनी के स्थान पर ऐसा प्रकाश चाहिए जो मन के भीतर तक सभी कोनों को आलोकित कर सके**

दिवाली अंधकार और प्रकाश की अद्भुत आंख-मिचौली का लोक उत्सव है। कार्तिक मास की अमावस्या की रात को मनाए जाने वाले इस उत्सव में दीये जलाए जाते हैं। घने अंधकार वाली इस काली रात में प्रकाश की तलब ज्यादा होती है। प्रकाश ऊर्जा का स्रोत है। सूर्य की रश्मियां और अग्नि के स्फुलिंग में जीवन का सार जानकर मनुष्य ने प्रण किया कि 'अंधकार से डरना नहीं है, उसे चुनौती देना है।' इसी भाव को स्थापित करना दिवाली के उत्सव का मूल प्रयोजन है। मिट्टी के दीयों की पांत से दिवाली बनती है। अब दीयों की पांत कम होती जा रही है। उसकी जगह मोमबत्ती या फिर बिजली के जगमगाते लट्टू या लड़ी प्रयोग में आने लगी है, परंतु अंधेरी रात में जगमगाती रोशनी से अद्भुत सौंदर्य की सृष्टि होती है और तमो गुण को दूरकर सत्व गुण की प्रतिष्ठा के संकल्प के साथ दीया-दियारी का यह उत्सव मनुष्य की आत्मिक शक्ति के संधान का आह्वान करता है।

देश काल की दृष्टि से आमजन या कहें कि गृहस्थों के इस उत्सव के साथ एक भौतिक-सामाजिक गतिशीलता का भी एक पक्ष जुड़ा हुआ है जिसमें समाज के हर वर्ग के लोग शामिल होते हैं। इसका सीधा रिश्ता ऋतु-परिवर्तन और खेती-किसानी से भी है। वर्षा ऋतु की समाप्ति और शरद ऋतु के आरंभ के साथ मौसम नए संकेत देता है और नई तैयारी के लिए आमंत्रण मिलता है। खरीफ की फसल तैयार होने से किसान भी समृद्धि का अनुभव करता है। एक तरह से यह उत्सव सृष्टि-चक्र के संगीत का एक राग है जिसमें सबकी भागीदारी होती है। इस राग के गायन में मनुष्य, पशु-पक्षी, संध्या-प्रभात, दिन-रात सबकी संगति और लय के साथ अपनी-अपनी भूमिका होती है। सभी अपने को नए आरंभ के लिए तैयार करते हैं। सभी दिवाली की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं। इस अवसर पर घर की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है, घर के बाहर रंगोली भी बनाते हैं। बाजार में भी दुकानदार दुकानें सजाते हैं और नए उत्पाद बाजार में उतारते हैं। इस दिन आतिशबाजी भी होती है। खील-बताशा, मिठाई, वस्त्र आदि के उपहार देकर लोग पारस्परिक संबंधों को प्रगाढ़ करते हैं और एक-दूसरे के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। दीपावली के पहले 'धनतेरस' के दिन खरीद फरोख्त को शुभ माना जाता है और अपनी हैसियत के अनुसार सोने या चांदी की खरीदारी की जाती है। अगले दिन नरक चतुर्दशी या छोटी दिवाली होती है जब तुलसी के चौरे पर दीपक जलाया जाता है। दीपावली के दिन विष्णुप्रिया लक्ष्मी और गणपति गणेश की विशेष पूजा की जाती है और रात भर दीपक जलाकर रखा जाता है। अगले दिन भाई दूज या यम द्वितीया मनाई जाती है। दुकानदार अपना नया बही खाता शुरू करते हैं।



दिवाली का सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व इसलिए बढ़ जाता है, क्योंकि इसका संबंध अनेक धर्मों और अनेक सामाजिक स्मृतियों से है। वस्तुतः यह अनेक पर्वों का एक संकुल सरीखा है जिसकी शुरुआत मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र से जुड़े मिथकों से होती है। कहते हैं कि 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटने पर पुरवासियों द्वारा दीप जलाकर उनका भव्य स्वागत किया गया। अब फिर अयोध्या में दीपोत्सव की भव्य परंपरा शुरू हुई है जिसमें कई लाख दीयों के साथ भगवान राम का स्मरण किया जाता है। पांडवों की वनवास से वापसी की भी यही तिथि मानी जाती है। नरकासुर और हिरण्यकश्यप जैसे दुष्ट राक्षसों का वध और समुद्र-मंथन से वैद्यराज धन्वंतरि के प्रकट होने की कथा भी दिवाली पर्व से जुड़ी हुई है। बंगाल में काली पूजा और मथुरा में गोवर्धन पूजा भी बड़ी लोकप्रिय है। दिवाली से यम और नचिकेता की याद भी जुड़ी हुई है जो भौतिक सत्ता की नश्वरता और आत्मज्ञान की महिमा का बखान करती है। प्रमुख जैन तीर्थंकर महावीर के मोक्ष की भी यही तिथि है। अमृतसर के प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर का शिलान्यास इसी दिन हुआ था।

आज दिवाली का पर्व संपन्नता का प्रतीक और अर्थ की साधना का अवसर माना जाने लगा है। विकास के नाम पर आज एक विराट उपभोक्ता संस्कृति मुंह बाएं खड़ी हो रही है जिसमें बाजार का वर्चस्व है। हावी होते अंधकार के चलते आज तृष्णा और लोभ के वशीभूत लोग मोह और लिप्सा में फंसते जा रहे हैं। इसके साथ अनावश्यक वस्तुओं की भूख बढ़ रही है। समाज में असमानता और असंतुलन भी बढ़ रहा है। ऐसे में नकली रोशनी की जगह स्निग्ध रोशनी की दरकार है जो मन के भीतर तक हर कोने को आलोकित कर सके।

इतिहास साक्षी है कि अंधकार के साथ मनुष्य का संघर्ष सतत चलता रहा है। प्रकाश का मूल्य गहरे अंधकार के क्षणों में पता चलता है जब राह नहीं सूझती, इधर-उधर पैर पड़े तो ठोकर लगती है और हम अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच पाते। हमारा सामाजिक जीवन भी कुछ ऐसी ही यात्रा है जिसमें विवेक का आलोक चाहिए। इस आलोक की सहायता से हमें सदाचार के पथ पर अग्रसर होने में सहायता मिलती है। महात्मा गांधी ने इसी दिशा में कदम बढ़ाया था। काफी सोच विचार के बाद ही उन्होने सत्य की कसौटी और अहिंसा की राह चुनी थी। पंथ, जाति, वर्ग और क्षेत्र जैसे सीमित आधारों को परे धकेल कर उन्होने निखालिस मानुष धर्म को अंगीकार किया था। उनकी सोच में सभी बराबर थे और लोक-हित ही सर्वोपरि था। उनके लिए सभी आत्मीय थे और 'पराई पीर' और 'पर दुख' का निवारण कैसे हो, यही उनके वैष्णव मन की सबसे बड़ी चिंता थी। उनका जीवन, नीतियां और रचनात्मक कार्यक्रम सभी गहन लोक-संग्रह के विवेक से अनुप्राणित थे।

आज हमारे भीतर मौजूद राग-द्वेष, ईर्ष्या, घृणा, चोरी, बेईमानी, दायित्वहीनता, अहंकार और आत्म-श्लाघा जैसे कलुष चुनौती बनकर सिर उठा रहे हैं। इसका परिणाम व्यक्ति या समाज के हित में अच्छा नहीं हो रहा। दिवाली में मुख्य रूप से गणेश जी और लक्ष्मी जी की पूजा होती है। गणेश जी गणदेवता हैं जिनकी विधिवत पूजा आराधना के बिना अर्थात लोककल्याण के बिना लक्ष्मी जी कभी प्रसन्न नहीं होंगी। भगवान बुद्ध कहते हैं कि मनुष्य आत्मदीप होता है। इसीलिए कहा जाता है कि अपना दीया खुद बनो। दिवाली का उत्सव इसी आत्म-साक्षात्कार को न्योता देता है।

(लेखक शिक्षाविद् हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

## भीतर का प्रकाश

आज प्रकाश का त्योहार है, लेकिन प्रकाश के मायने केवल बाहरी तत्वों का चमकना नहीं है। इंसान के भीतर एक प्रकाश है जिसे आत्म प्रकाश कहते हैं। अगर आत्मा के भीतर छल, दंभ, निर्दयता और हिंसा समाहित है तो यह अंधकार का साया है। सामान्यतया काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या आदि अवगुण अपनी सीमाओं को पार कर अंधकार का आवरण धारण कर हमारे हृदय पर छा जाते हैं और हमारी आत्मा के प्रकाश को इस तरह से रोक देते हैं जैसे सूर्य की रोशनी को बादल रोक लेता है। भीतर उजाले के लिए दया, परोपकार, क्षमा, अहिंसा का दीप जलाना पड़ेगा और अगर भीतर उजाला करना है तो सद्मार्ग अपनाना पड़ेगा। भीतर का प्रकाश परोपकार के तेल से जलता है और फिर परोपकार का दीया जल जाए तो भीतर सब दिखाई पड़ने लगता है।

जब पाने की कोई आकांक्षा न हो तो तुम्हारे जीवन में बड़ी रोशनी होगी। ऐसे ही दिवाली का त्योहार भी हमें अवसर देता है अपने भीतर रोशनी करने का। हमें लौ के उजाले को अपनी आत्मा के उजाले से इस तरह से जोड़कर रखना होगा ताकि प्रकाश का पुंज और तीव्र होकर भ्रम के कोहरे को पार कर हमारे भीतर को प्रदीप्त कर सके। जब तक आपके अंदर की भावना संकुचित है, तब तक त्योहार मनाना व्यर्थ है। ऐसी सोच के कारण ही कभी-कभी आपकी बाहरी दया और सेवा का भाव उस वक्त धरा रह जाता है जब आप जश्न के शोर में इतने मशगूल हो जाते हैं कि अन्य जीवों यानी पशु, पक्षियों को कितनी तकलीफ होती है, आसपास का वातावरण कितना दूषित होता है, यह भान नहीं रहता। थोड़ी उदारता का भाव मन में रखें। यह ध्यान रखें कि क्या यह त्योहार हमें यही सीख देता है कि औरों को परेशान करें। कभी नहीं। यही हमें अपनी जीवन धारा को सही दिशा में ले जाएगा। तो इस दिवाली अपने हृदय में द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार और मोह को त्यागकर बेसहारों का सहारा बनें। उनके साथ खुशियां मनाएं। तभी अपने भीतर हम उजाला कर पाएंगे।

नरपत दान चारण

# कृत्रिम पत्ते से बनेगा ईंधन

मुकुल व्यास

**अगर इस मुहिम में कामयाबी मिलती है तो पेट्रोल का एक विकल्प मिल सकता है जो उतना प्रदूषणकारी भी नहीं होगा**

खनिज तेलों से तैयार होने वाली एक महत्वपूर्ण गैस अब एक 'कृत्रिम पत्ते' से तैयार की जा सकती है जो सिर्फ सूरज की रोशनी, कार्बन डाईऑक्साइड और पानी का इस्तेमाल करता है। इस कृत्रिम पत्ते से भविष्य में पेट्रोल के विकल्प के रूप में स्वच्छ ईंधन भी विकसित किया जा सकेगा। कैंब्रिज यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अनुसार उनका यंत्र बहुत आसानी से इस गैस का उत्पादन कर सकता है। इस गैस को 'सिनगैस' भी कहा जाता है। कृत्रिम पत्ते को ऊर्जा सूरज की रोशनी से मिलती है। हालांकि यह बादलों वाले दिनों में भी उतनी ही कुशलता के साथ काम करता है। यह पत्ता सिनगैस के उत्पादन के लिए प्रयुक्त वर्तमान औद्योगिक प्रक्रियाओं से बेहतर है, क्योंकि यह वायुमंडल में अतिरिक्त कार्बन डाईऑक्साइड नहीं छोड़ता। शोधकर्ताओं के नतीजे नेचर मटेरियल्स पत्रिका में प्रकाशित किए गए हैं। सिनगैस इस समय हाइड्रोजन और कार्बन मोनोऑक्साइड के मिश्रण से तैयार की जाती है। इसका उपयोग कई तरह के उत्पाद बनाने के लिए किया जाता है। इन उत्पादों में ईंधन, दवाएं, प्लास्टिक और उर्वरक शामिल हैं। कैंब्रिज में रसायन शास्त्र के प्रोफेसर इर्विन रेसनर ने कहा कि आपने कभी सिनगैस के बारे में नहीं सुना होगा, पर रोज आप ऐसे उत्पादों का उपभोग करते हैं जो इसके इस्तेमाल से निर्मित किए गए हैं। यदि हम इस गैस को पर्यावरण के अनुकूल तरीके से बनाने में सफल हो जाते हैं तो दुनिया पर कार्बन का बोझ कम होगा।

रेसनर और उनके सहयोगियों को यह डिवाइस बनाने की प्रेरणा फोटोसिंथेसिस (प्रकाश-संश्लेषण) की प्रक्रिया से मिली है। पेड़-पौधे इस कुदरती प्रक्रिया के जरिये सूरज की रोशनी की ऊर्जा से कार्बन डाईऑक्साइड को खाद्य पदार्थ में बदलते हैं। कृत्रिम पत्ते में प्रकाश को सोखने वाले दो लाइट एब्जॉर्बर और कोबाल्ट से बने उत्प्रेरक का प्रयोग होता है। ये लाइट एब्जॉर्बर पौधों के उन्हीं मॉलिक्यूल्स की भांति होते हैं जो सूरज की रोशनी का प्रयोग करते हैं। इस डिवाइस को पानी में रखने पर एक लाइट एब्जॉर्बर उत्प्रेरक की मदद से ऑक्सीजन उत्पन्न करता है। दूसरा एब्जॉर्बर रासायनिक क्रिया को अंजाम देता है जो कार्बन डाईऑक्साइड और पानी को कार्बन मोनोऑक्साइड और हाइड्रोजन में बदल देती है। इससे सिनगैस बनती है। शोधकर्ताओं ने पाया कि ये लाइट एब्जॉर्बर सूरज की कम रोशनी में या बारिश और बादल वाले दिनों में भी काम करते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि यह टेक्नोलॉजी सिर्फ गर्म देशों या गर्मी के महीनों तक ही सीमित नहीं है। इसका उपयोग दुनिया के किसी भी कोने में सुबह से लेकर शाम तक किया जा सकता है। इस कृत्रिम पत्ते की तरह कुछ और भी डिवाइस भी निर्मित किए गए हैं, लेकिन इनसे सिर्फ हाइड्रोजन बनती है। कैंब्रिज के शोधकर्ताओं का कहना है कि उन्होंने अपने डिवाइस में विभिन्न पदार्थों और उत्प्रेरकों का उपयोग करके सिनगैस निर्मित करने में सफलता प्राप्त की। शोधकर्ता अब इसी टेक्नोलॉजी से एथेनॉल जैसे स्वच्छ तरल ईंधन बनाने के तरीके खोज रहे हैं।

(लेखक विज्ञान विषय के जानकार हैं)

## ईवीएम पर बोलती बंद

किसी शायर ने खूब कहा है, 'दुश्मनी करो तो जम कर करो, मगर इतनी सी गुंजाइश रखो कि फिर कभी हम दोस्त हो जाएं तो बस शर्मिंदगी न हो।' हर चुनाव में नतीजों से पहले ही शक भरी निगाहों से गुजरने वाली ईवीएम मशीन ने न केवल फिर से अग्निपरीक्षा में खुद को पाक साबित किया, बल्कि ऐसे नेताओं की बोलती भी बंद कर दी जो इस पर हैक हो जाने का आरोप लगा रहे थे। महाराष्ट्र और हरियाणा में आए चुनावी नतीजों ने बिना कुछ कहे सब को निःशब्द कर दिया है। आलम यह है कि अब तो राजनीतिक दलों में भी नेता अंदरखाने एक दूसरे को यही समझाते दिखने लगे हैं कि ईवीएम पर जबरन सवाल खड़ा कर उपहास का पात्र बनने से बचा जाए। इसके इतर दूसरी ओर ईवीएम मशीन पर छाई चुप्पी से केंद्रीय चुनाव आयोग गदगद है। वरिष्ठ अधिकारियों की तो जैसे बांछें ही खिल उठी हैं। सरकारी नौकरशाह होने के चलते वो सामने तो केवल मुस्कुरा कर काम चला रहे हैं, लेकिन बंद चहारदीवारी में गहरी सांस लेकर यह पूछने से भी नहीं चूक रहे कि आखिर जवाबदेही क्या सिर्फ आयोग की है?

## वास्तु व दिशा

ऊंचे लोगों की ऊंची पसंद। संसद में आए माननीयों की पसंद के घर की ख्वाहिश पूरी करने वाली सरकारी एजेंसी के पसीने छूट रहे हैं। इस बार भी हाल कुछ अलग नहीं है। वैसे तो ज्यादातर साहबों ने आवंटित आवासों में नवरात्र के शुभ मुहूर्त में प्रवेश कर लिया है, लेकिन अभी भी कई बचे हुए हैं। आवंटित आवासों में तोड़फोड़ और मरम्मत इस कदर कराई जा रही है कि एजेंसी के अफसरों की सांसें फूलने लगी हैं। इसमें से बड़ी चुनौती दिशा और वास्तु है। सबके वास्तुकार और पंडित जी अलग-अलग दिशा बताकर दरवाजे और खिड़कियां तुड़वा रहे हैं। पानी के टैंक की दिशा ही नहीं शौचालय की दशा से ज्यादा दिशा पर ध्यान दिया जा रहा है। पाइप लाइन किधर से आ रही है और छत की बीम की मोटाई कितनी है? सारे पुराने फर्नीचर हटाकर नए लगाने पड़ रहे हैं। लंबे चौड़े लॉन में नया अस्थाई कार्यालय और आगंतुकों के बैठने और रात में ठहरने के अस्थाई बंदोबस्त कराए जा रहे हैं। हर बार होने वाली इस कवायद को रोकने की कोशिशें हर बार नाकाम होती हैं।

राजरंग

## बिन मांगी सीख

हरियाणा में गोपाल कांडा के समर्थन को लेकर बड़ा बवाल खड़ा हुआ और आखिरकार यह घोषणा हो गई कि भाजपा का उससे कोई लेना देना नहीं है। राजनीति में यह सामान्य घटना है, लेकिन जिस तरह उमा भारती ने खुलेआम भाजपा को सीख दी उसने सबके कान जरूर खड़े कर दिए हैं। यह सवाल उठ रहा है कि जब भाजपा की ओर से कोई घोषणा हुई ही नहीं थी तो फिर उन्होंने आखिर किसके कहने पर सार्वजनिक बयान देकर भाजपा को कठघरे में खड़ा कर दिया। वैसे उनका खुद का तेवर किसी से छिपा नहीं है, लेकिन चाहे अनचाहे उन लोगों के बारे में भी चर्चा शुरू हो गई है जिनसे वह संपर्क में हैं। वैसे यह कोई अनोखी घटना नहीं है। पहले भी एक बार साबिर अली को शामिल किए जाने को लेकर विवाद खड़ा हुआ था, हालांकि उसका कोई असर नहीं हुआ। जबकि काफी पहले एक बार डीपी यादव भाजपा में शामिल हो गए थे और विवाद खड़ा होते ही उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया गया था।



## डिनर की उलझन

चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग मामल्लपुरम पहुंचे, उनका जम कर स्वागत हुआ, पीएम मोदी से खूब बात भी हुई और अपनी आवभगत से गदगद होकर वह लौट भी गए, लेकिन उनके प्रवास के दौरान कई बार कुछ वक्त ऐसा भी आया जब दोनों देशों के अधिकारियों के पसीने छूट गए। मौका था पीएम की तरफ से दिए गए डिनर का। आयोजन इस तरह से रखा गया था कि मोदी और चिनफिंग एकांत में डिनर करें और दोनों देशों के बाकी अधिकारी अलग से करें, मगर चीनी अधिकारियों को यह नागवार गुजरा कि उनकी सरकार के बेहद आला मंत्री जिसमें एनएसए व विदेश मंत्री भी शामिल हैं, को राष्ट्र प्रमुखों के साथ नहीं बैठाया जा रहा है। खैर भारतीय दल नहीं झुका और इनकी इच्छा के मुताबिक ही सारा आयोजन किया गया। बाद में जब दोनों नेताओं की बैठक तय समय से दोगुने से भी ज्यादा समय तक चली तब चीन के अधिकारी भी भारतीय दल को बधाई देने लगे।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।